आरती पारब्रह्म परमेश्वर जी की

जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।
मायातीत, महेश्वर, मन वचन बुद्धि परे ।। टेक ।।

आदि अनादि, अगोचर, अविचल, अविनाशी ।
अतुल, अनन्त, अनामय, अमित, शक्तिराशी ।। जय....

अमल, अकल, अज, अक्षय, अव्यय, अविकारी ।
सुत-चित सुखमय, सुन्दर, शिव सत्ताधारी ।। जय....

विधि-हरि शंकर गणपति, सूर्य शक्तिरूपा ।
विश्व चराचर तुम ही, तुम ही विश्वभूता ।। जय....

मात ,पिता, पितामह, स्वामी सहृदय-भर्ता ।
विश्वोत्पादक, पालक, रक्षक, संहर्ता ।। जय....

साक्षी, शरण, सखाप्रिय, प्रियतम, पूर्ण प्रभो ।
केवल काल, कलानिधि, कालातीत विभो ।। जय....

राम, कृष्ण, करुणामय, प्रेमामृत सागर ।
मनमोहन, मुरलीधर, नित-नव, नट नागर ।। जय....

सब विधि हीन मलिन मति, हम अति पातक जन ।
प्रभु पद विमुख अभागी, कलि कलुषित तन मन ।। जय....

आश्रय दान दयानिधि ! हम सबको दीजै ।
पाप ताप हर हरि ! अब, निज जन कर लीजै ।। जय....

विवरण

सम्पूर्ण जगत के ईश्वर, पारब्रह्म परमेश्वर की जय हो । ये महेश्वर माया के अतीत हैं, तथा मन, वचन, एवं, बुद्धि पर भी इन्हीं का राज चलता है । आरंभ में भी यहीं है और अंत में भी यही हैं, इन्हे कोई देख नहीं सकता, ये अविचल अविनाशी हैं (इनका कभी विनाश नहीं हो सकता) न ही इनकी किसी से तुलना की जा सकती है ।

इनका कहीं अन्त नहीं है, इनके अनगिनत नाम हैं एवं शक्ति के भंडार भी यहीं हैं, ऐसे सम्पूर्ण जगत् के ईश्वर की जय हो ।

यही विधिरूप में है, यही भगवान शंकर हैं, यही गणेश भी हैं तथा सूर्य के शक्ति के रूप में भी यहीं हैं । इस चर और अचर जगत् के स्वामी यही है, तथा इस जगत् के रक्षक भी यहीं है । यहीं हमारे माता हैं, पिता हैं, एवं पितामह भी हैं, ये स्वामी सहज हृदय से हमारा भरण पोषण करते रहते हैं । सम्पूर्ण विश्व के
उत्पति को करने वाले यहीं हैं, पालन करने वाले यहीं हैं, इस जगत् के रक्षक भी यही हैं ।

ये शरणागत को शरण देने वाले है, ये अपनी सखाओं के प्रिय हैं एवं ये अपनी प्रिया (राधा) के प्रियतम हैं । राम भी यही है, कृष्ण भी यही हैं । सबके प्रति दया रखनेवाले हैं तथा ये प्रेम रूपी अमृत के सागर हैं । ये मन को मोहने वाले हैं,वंशी को धारण करने वाले हैं तथा नित्य नये-नये नाटक रचते रहते हैं ।

हे परमेश्वर ! सभी प्रकार से हमारा मन मैला है, हम बहुत ही गिरे हुए प्राणी हैं, क्योंकि अभी तक हम आपके पद से विमुख हैं, हमारा तन-मन दुर्विचारों से दूषित हो गया है । हे दया के सागर ! हम सबको अपने चरणों में जगह दीजिए और हमारे सभी पापों का हरण करके हमें अपना लीजिए ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.